हिन्दी अकादमी, हैदराबाद ISSN 2277-9264
यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित पत्रिका (क्रमांक-120)

संकल्य

51 वर्षों से
निरंतर दक्षिण से
प्रकाशित

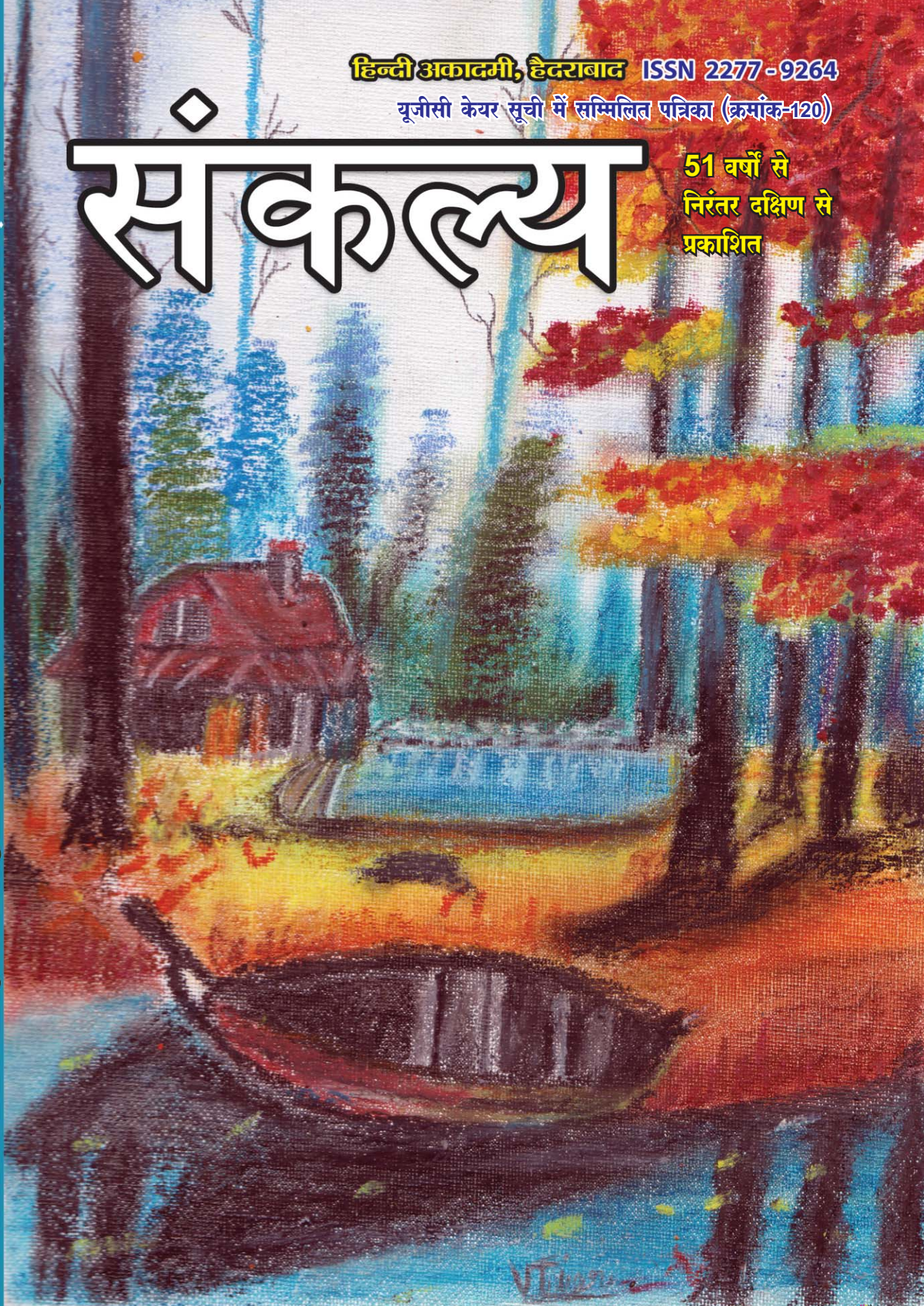

विनम्र श्रद्धांजलि

श्री मनोज कुमार मिश्र

(18-02-1967 : 04-10-2023)

नियति की गति से संसार अनभिज्ञ है। सृष्टि निर्माता की इच्छा को भी सांसारिक प्राणी कैसे समझे? सभी को अपना जन्म तो मालूम है, किन्तु अपनी मृत्यु का पता नहीं होता। कबीर ने सच ही कहा था –'कबीरा जब हम पैदा हुए जग हँसा हम रोए / ऐसी करनी कर चलो हम हँसे जग रोए'। हमें तो ईश्वर ने संसार में केवल कर्म करने का अधिकार दिया है बाकी सब उनकी इच्छा। ऐसे ही इस कर्ममय जगत में अदम्य निष्ठा के साथ कर्म करते हुए काल के गाल में समा गए साहित्य मर्मज्ञ श्री मनोज कुमार मिश्र जी बहुत ही मिलनसार, हँसमुख तथा दया के प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने जीवन भर संघर्ष कर अपने परिवार का भार उठाते हुए हँसते-हँसते संसार को अलविदा कह दिया। बाबा तुलसी की पंक्ति को यदि उधार लें तो कह सकते हैं – 'होइहि सोइ जो राम रचि राखा'।

हिंदी अकादमी हैदराबाद की भागिनी संस्था अखिल भारतीय बज्जिका साहित्य सम्मेलन के उपाध्यक्ष रहे श्री मनोज कुमार मिश्र जी 2003 से 2005 तक बिहार की बोलियों (बज्जिका और अंगिका) के व्यापक रूप से प्रचार – प्रसार में लगे रहे। हिंदी भाषा और साहित्य के लिए उनका अवदान अविस्मरणीय है।

श्री मनोज कुमार मिश्र मुजफ्फरपुर से प्रकाशित और हिंदी अकादमी द्वारा संचालित 'बज्जिका माधुरी' (त्रै.) प्रत्रिका के संपादक मंडल के सदस्य थे। उनके सान्निध्य में बिहार भर में यह पत्रिका खूब चर्चित रही। यद्यपि वे मैनेजमेंट के विद्वान थे, लेकिन हिंदी प्रेम उनमें कूट – कूट कर भरा रहा। वे एक सहृदयवान साहित्य प्रेमी, उदार, कर्मठ और सुयोग्य प्रशासक थे। उनके निधन से हिंदी अकादमी और 'संकल्य' पत्रिका की व्यक्तिगत क्षति हुई है। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि उनकी अमर आत्मा को सद्गति प्रदान करें और शोकाकुल परिवार को इस वज्राघात से उबरने की शक्ति दें।

ISSN : 2277-9264

यू. जी. सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल

मधुसूदन चतुर्वेदी एवं प्रो. बैजनाथ चतुर्वेदी कीर्ति स्तंभ

स्थापना वर्ष : 1956

संकल्य

त्रैमासिक

वर्ष : 51 : अंक–3, जुलाई–सितंबर, 2023

प्रधान संपादक
प्रो. आर. एस. सर्राजु

प्रेरणास्रोत
विवेकी राय एवं
प्रो. टी. मोहन सिंह

कानूनी सलाहकार
सुश्री कविता ठाकुर

संपादक
डॉ. गोरखनाथ तिवारी
डॉ. शशिकांत मिश्र

प्रबंध संपादक
रेखा तिवारी

प्रूफ रीडर
प्रमोद कुमार मणि त्रिपाठी

परामर्शदाता मंडल

प्रो. टी. आर. भट्ट
प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल
प्रो. दिलीप सिंह
प्रो. तेजस्वी कट्टीमनी
प्रो. नंद किशोर पांडेय
प्रो. शुभदा वांजपे
प्रो. जयंत कर शर्मा
श्री ओम धीरज
श्री रूद्रनाथ मिश्र

सम्मानीय संरक्षक

श्री राजेश्वर तिवारी, आई.ए.एस.
श्री लाल जी राय, आई.ए.एस.
श्री जितेंद्र रेड्डी, पूर्व संसद सदस्य
प्रो. आर. के. मिश्रा (विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री)

प्रकाशक
डॉ. गोरखनाथ तिवारी
सचिव : हिंदी अकादमी, हैदराबाद

संपादकीय कार्यालय

प्लॉट नं. 10, रोड नं. 6, समतापुरी कॉलोनी
न्यू नागोल के पास, हैदराबाद– 500 035 (तेलंगाना)

संकल्य (त्रैमासिक)

- प्रकाशित सामग्री की रीति–नीति या विचारों से **हिंदी अकादमी, हैदराबाद** या संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है।
- **'संकल्य'** से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल हैदराबाद न्यायालय के अधीन होंगे।
- **हिंदी अकादमी** तथा हिंदी सेवा के लिए समर्पित **'संकल्य'** त्रैमासिक के सभी पद अवैतनिक है।

ऑनलाइन संकल्य की सदस्यता शुल्क भेजने हेतु पृष्ठ 159 पर बैंक डिटेल देखें।

शुल्क भेजने का पता :

मनीआर्डर या बैंक ड्राफ्ट **हिंदी अकादमी** के नाम

सचिव : डॉ. गोरखनाथ तिवारी
फ्लैट नं. 258/ए, ब्लॉक नं.11, तीसरी मंजिल,
जनप्रिया टाउनशिप, मल्लापुर
हैदराबाद– 500 076 (तेलंगाना), ई–मेल : **hindiakadami@gmail.com**
फोन : 09441017160/9032117105

मूल्य :

एक अंक का मूल्य रु. 125/–
वार्षिक : रु.500/–, **आजीवन सदस्यता :** रु.6,000/– (व्यक्तिगत),
संस्थागत आजीवन : रु.7,500/–, संस्थाओं के लिए : **वार्षिक** सदस्यता : रु. 800/–,
संरक्षक सदस्यता शुल्क : रु.7,500/–

आवरण चित्र

- **विश्वास तिवारी, सुरभि राय** चित्रकार

मुद्रक :

कर्षक आर्ट प्रिंटर्स
40–ए.पी.एच.बी.
विद्यानगर, हैदराबाद–500 044
फोन : 040–27618261, 27653348

संकल्य पत्रिका में प्रकाशन हेतु Kruti Dev 010 या Unicode Mangal फ़ांट में सामग्री टाइप करवाकर ई–मेल : hindiakadami@gmail.com पर भेजें।

ISSN 2277-9264/यू. जी. सी. केयर सूची में सम्मिलित जर्नल RNI No. 25388/74

संकल्प त्रैमासिक

वर्ष : 51 : अंक–3, जुलाई–सितंबर, 2023

अनुक्रम Contents

संपादकीय

आजादी का अमृत महोत्सव और हिंदी : प्रो. आर. एस. सर्राजु 05

साक्षात्कार

प्रो.सुनील बाबुराव कुलकर्णी से बातचीत : डॉ. गोरखनाथ तिवारी 07

कविता

1. 'बारहमासा बादल' : ओम धीरज 14
2. 'सोचा क्या' : राम मिलन प्रसाद 'बटोही' 15
3. सद्भाव का बगीचा : सूर्यप्रकाश शर्मा 'सूर्य' 16

आलेख

4. अजातशत्रु आचार्य मोहन सिंह की संपादकीय दृष्टि : डॉ. गोरख नाथ तिवारी 17
5. व्यंग्यधर्मिता और हरिशंकर परसाई : डॉ. जयंत कर शर्मा 26
6. ज्ञानेंद्र कृत 'कवि ने कहा' काव्य–संग्रह का शैलीवैज्ञानिक विश्लेषण : प्रो. सदानंद भोसले व रेवनसिद्ध काशिनाथ चव्हाण (शोध छात्र) 36
7. अस्मितामूलक विमर्श : समकालीन स्त्री कविता के विविध रंग : प्रो. एम. श्याम राव 42
8. 'मुझे चाँद चाहिए' उपन्यास में उत्तर–आधुनिक संदर्भ : डॉ. रत्नेश कुमार यादव 57
9. 21वीं सदी की हिंदी कहानियों में चित्रित पारिवारिक संबंध : रीना सिंधु 63
10. आधुनिक काव्य में मानवीय मूल्य : डॉ. गीता एच. तलवार 68
11. मैत्रेयी पुष्पा की वैचारिकता में स्त्री सशक्तीकरण : डॉ. वी. गोविंद 72
12. उदय प्रकाश की कहानियों में सामाजिक समस्याएँ : शाहिद अली 75
13. दूधनाथ सिंह के कथा साहित्य में नारी स्वर : बशीर अहमद 80
14. अपनों के बीच, अपने ही पराये 'गिलिगडु' उपन्यास के संदर्भ में : रेखा गुप्ता 84

15. उषा प्रियंवदा के 'पचपन खंभे लाल दिवारें' तथा 'रुकोगी नहीं राधिका' उपन्यासों में नारी मुक्ति : डॉ शिवानंद एच. कोली 89
16. शमशेर का काव्यलोक : उपासना झा 93
17. आलमकृत 'सुदामा चरित्र' : एक अनुशीलन : डॉ. बनवारी लाल मीणा डॉ. इबरार खान 98
18. विविधता में समाहित कश्मीर की सांस्कृतिक परंपरा : डॉ. नसरीना बानो 103
19. साहित्य पर सिनेमा और पत्रकारिता का प्रभाव : हरिस्वरुप 109
20. विदेशों में हिंदी साहित्य की सृजन भूमि एवं उपस्थिति : डॉ. जे. सरिता 118
21. ''आधुनिक हिंदी साहित्य : मानवीय जीवन मूल्यों के संदर्भ में'' : डॉ. रवींद्रनाथ माधव पाटील 121
22. भारतीय राजनीति में दल–बदल की स्थिति एवं सुधार : डॉ. किरण त्रिपाठी 127
23. नारी मुक्ति संघर्ष की प्रतीक मीरा : डॉ. यशपाल सिंह राठौड़ 134
24. हिंदी साहित्येतिहास लेखन में आचार्य शुक्ल का योगदान : डॉ. सुरेंद्र कुमार 140
25. सामाजिक विकास में पत्रकारिता का योगदान : ईश्वरी ए. एवं डॉ. शशिप्रभा जैन 145
26. 'दलित ब्राह्मण' कहानी में दलित होने की त्रासदी : कुमारी अनीता 150
27. हिंदी दलित कथा साहित्य में सामाजिक चेतना : माया शर्मा एवं डॉ. राजेश कुमार शर्मा 154

संपादकीय

आजादी का अमृत महोत्सव और हिंदी

प्रो. आर. एस. सर्राजु
प्रधान संपादक

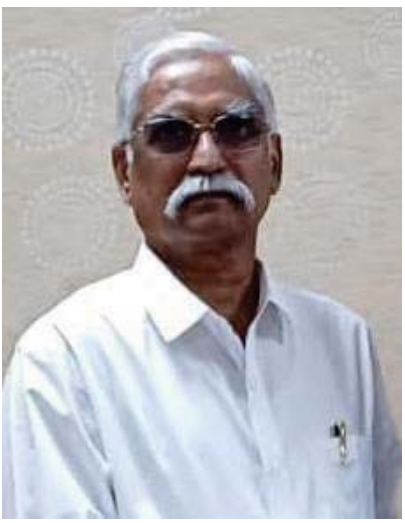

आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान राजभाषा हिंदी के महत्व को स्पष्ट करने और हिंदी के प्रयोग के प्रति समर्पण की भावना को प्रकट करने के लिए हम हर वर्ष की तरह हिंदी दिवस और हिंदी सप्ताह मना रहे हैं। वास्तव में हिंदी भारत की राजभाषा ही नहीं, यहाँ की जनता की भाषा भी है। इस भाषा का विकास हिंदी भाषाई समाज में संप्रेषण की भाषा के रूप में हो रहा है तो हिंदीतर और हिंदी भाषी समाजों के बीच में संपर्क भाषा के रूप में भी हो रहा है। इसके अलावा कुछ प्रदेशों में मुख्य रूप से हिंदीतर भाषाई समाजों में भी संप्रेषण की मुख्य भाषा के रूप में हिंदी विकसित हो रही है। मुंबइया हिंदी, कलकतिया हिंदी, हैदराबादी जैसे नामों से अभिहित होने वाली इस भाषा का विकास हिंदीतर क्षेत्रों में हो रहा है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी प्रवासीय भारतीय भाषा के रूप में फिजी, मारिशस, सूरीनाम, गयाना, त्रिनिदाद आदि पूर्ववर्ती प्रवास के देशों में हिंदी अलग ढंग से विकसित हो रही है, तो आधुनिक युग के प्रवासी देशों–अमेरिका, इंग्लैंड, केनडा आदि देशों में संप्रेषण और संपर्क की भाषा के रूप में हिंदी का विकास अलग ढंग से हो रहा है। कुलमिलाकर अंतरराष्ट्रीय और भारतीय बहुभाषिक समाजों में हिंदी का विकास नई दिशा में जनभाषा के रूप में हो रहा है। भूमंडलीकरण और बहुभाषिकता के दौर में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा अन्य भाषाओं के साथ अपने सह अस्तित्व को सही ढंग से प्रदर्शित कर रही है। राजभाषा हिंदी जहाँ एक ओर जनभाषा के रूप में विकसित हो रही है, वहाँ दूसरी ओर द्विभाषिक और बहुभाषिक सांस्कृतिक परंपराओं को आत्मसात करती हुई सामान्य संप्रेषण की भाषा के रूप में विकसित हो रही है। सूचना प्रौद्योगिकी और वर्तमान मीडिया हिंदी भाषा के विकास की इस प्रक्रिया को प्रभावित कर रही है। भारत में अब शिक्षा के क्षेत्र में भी हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। जब तक पूर्ण रूप से शिक्षा माध्यम के रूप में और ज्ञान–विज्ञान की भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग नहीं

होगा तब तक सेवा के क्षेत्र में हिंदी भाषा का प्रयोग प्रचुर मात्रा में सहज रूप से नहीं हो सकता।

हिंदी भाषाई प्रदेशों में संप्रेषण की भाषा के रूप में प्रयुक्त होने वाली हिंदी अब हिंदीतर भाषाई क्षेत्रों में संपर्क की भाषा के रूप में और सेवा के क्षेत्रों में सरकारी कामकाज की भाषा के रूप में और शिक्षा के क्षेत्र में ज्ञान–विज्ञान के संप्रेषण की भाषा की रूप में विकसित हो रही है। यही नहीं, हिंदी अब भारत के जन मानस को अंतरराष्ट्रीय गतिविधियों से जोड़ने वाली भाषा भी बनती जा रही है।

अब आजादी के अमृत महोत्सव के इस वर्तमान समय में हिंदी भाषा के प्रयोग के लिए अनुकूल व्यापक परिदृश्य बनता जा रहा है। आशा करते हैं कि हिंदी का विपुल प्रयोग सभी क्षेत्रों में होगा और हिंदी के माध्यम से भारतीय जन तंत्र समृद्ध होगा।